Green Audit Report

Govt. Rani Durgawati College Wadrafnagar, Balrampur

(C.G.)

Submitted

To

Principal,

Govt. Rani Durgawati College Wadrafnagar, Balrampur

(C.G.)

By

Mr. Suresh Prasad Prajapati

Department of Botany

Guest Lecturer (Botany)

Govt. Rani Durgawati College Wadrafnagar, Balrampur

(C.G.)

GREEN AUDIT REPORT

Session
2019-20

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर, जिला–बलरामपुर(छ0ग0)

विवरणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
01	**शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय**	01
02	**महाविद्यालय में लगे पेड़–पौधों के वैज्ञानिक नाम व फैमिलि (कुल) की सूची**	02 से 03
03	**महाविद्यालय परिसर में लगाये गये पौधों का विवरण** फलदार पौधे फूलदार पौधे औषधीय पौधे/काष्ठीय पौधे सजावटी पौधे/ऑक्सीजन देने वाले पौधे	04 से 57
04	**महाविद्यालय परिसर में हरियर छत्तीसगढ़ के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम**	58
05	**महाविद्यालय परिसर की हरियाली व संरक्षण**	59

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर, बलरामपुर

महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर दिशा में बलरामपुर जिले के तहसील/ब्लाक वाड्रफनगर में स्थित है। जो की सरगुजा संभाग के अंतर्गत आता है तथा नैसर्गिक सौंदर्य के बीच अम्बिकापुर से लगभग 100 कि.मी. की दूरी पर अम्बिकापुर–वाराणसी मार्ग पर स्थित है। बलरामपुर जिला उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं झारखण्ड राज्य की सीमा से लगा हुआ है। वाड्रफनगर तहसील या ब्लाक दो राज्यों उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश की सीमा को स्पर्श करता है। जिसका क्षेत्रफल लगभग 15.4 लाख हेक्टेयर है। इस क्षेत्र का सौंदर्य घनघट पर्वत श्रेणियाँ है, जो अपनी पहचान बनाये हुये हैं। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय होने के कारण विशेष वन भी पाये जाते हैं। जिसमें मुख्य रूप से साल, सागौन, महुआ, तेंदू, हर्रा, बहेड़ा, धौरा, खैर आदि वृक्ष पाये जाते हैं। यह जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ गोंड़, खैरवार, पहाड़ी कोरवा, कंवर, पण्डो आदि है। ये जनजातियाँ सम्मिलित रूप से अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का अनुशरण करते हुए अपने अस्तित्व को परंपरागत रूप से संजोकर रखे हुए हैं।

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय इस क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। दूर–दराज ग्रामीण इलाकों से छात्र–छात्राएँ अपनी आंखों में उज्ज्वल भविष्य के लिये सपने संजोये हुए इस महाविद्यालय की दहलीज पर पहुंचते हैं। इस महाविद्यालय में पदस्थ शिक्षकगण इनके भविष्य को संवारने तथा अपने ज्ञान के द्वारा इनके व्यक्त्वि के विकास के लिए दृढ़ संकल्पित है। इस महाविद्यालय में अध्ययनरत हजारों विद्यार्थी अपने सपनों को साकार करते हुए अपने मंजिल को प्राप्त कर सकेंगे तथा उनके व्यक्तित्व विकास को एक नई दिशा मिल रही है।

Govt. Rani Durgawati College, Wadrafnagar, Distt.- Balrampur

Local Plant Name

फलदार पौधे

S.No.	Hindi Name	Local Name/Comman Name	Botanical Name	Family Name	Plants Number
01	आम	Mango	Mangifira Indica	Anacardiaceae	15
02	अमरूद	Guava	Psidium guajava	Myrtaceae	7
03	पपीता	Papaya	Carica Papaya	Caricaceae	5
04	जामुन	Jamun	Syzygium Cumini	Myrtaceae	17
05	बेर	Indian Plum	Ziziphus Maurtiana	Rhamnaceae	1
06	सीताफल	Custarb apple	Annona reticulata	Annonaceae	5
07	काजू	Cashew nut	Anacardium occidentale	Anacardaceae	3
08	बेल	Bel	Aegel marmelas	Rutaceae	2
09	शहतूत	Mulberries	Morus Nigra	Moraceae	3
10	तेन्दू	Tendu	Diospyros melanoxylon	Ebenaceae	5
11	सायकस	Sago Plam	Cycos Revoluta	Cycadaceae	2
12	कटहल	Jackfruit	Artocarpus Heterophyllos	Moraceae	2
फूलदार पौधे					
13	गुलाब	Damask Rose	Rosa damagcena	Rasasceae	8
14	गेंदा	Marigold	Tagetes erecta	Compositae	6
15	सदाबहार	Sadabahar	Catharanthus Roseum	Apocynaceae	14
16	मोगरा	Mogra	Jasminum sambac	Oleaceae	3
17	गुड़हल	China Rose	Hibiscus rosa-sinensis	Malvaceae	3
18	गुलदाउदी	Ghuldaudi	Chrysanthemum indicum	Compositae	40
19	चमेली	Jasmine	Jasminum Officinale	Oleaceae	3
20	गुलैची	Culaichi plant	Plumeria alba	Apocynaceae	2
21	मैक्सिकन सूरजमुक्खी	Mexican Sunflower	Tithonia diversifalia	Asteraceae	3
औषधीय पौधे / काष्ठीय पौधे					
22	तुलसी	holi Basil	Ocimum Sanctum	Lamiaceae	7
23	घीक्वार	Alovera	Aloe barbadensis	Liliaceac	7
24	पत्थर चट्टा	Bryophyllum	Calanchoe Pinnata	Crassulaceae	45
25	मदार	Madaror milkweeds	Calotropis Gigantea	Apocynaceae	1
26	ऑवला	Amla	Phyllanthus emblica	Phyllanthaceae	15
27	छुइमुई	Sensitive Plant	Mimosa Pudica	Fabaceae	15

28	पीली कंटेरी	Prickly poppy	Argemone mexicana	Papaveraceae	1
29	नाग पौधा	Snake Plant	Dracaena trifasciata	Asparagaceae	1
30	चकौरा	Gloss-wort	Salicornia europaea	Amaranthaceae	4
31	नीम	Neem	Azadirachta Indica	Meliaceae	43
32	अशोक	Asok	Saraca asoca	Fabaceae	39
33	पलाश	Flame of the Forest	Butea Monosperma	Fabaceae	4
34	महुआ	Mahua	Mahuaca Indica	Sapotaceae	12
35	मुनगा	Drumstick Tree	Moringa aleifera	Moringaceae	2
36	मीठा नीम	Sweet Neem	Murraya koenigii	Rutaceae	1
37	करंज	Karanj	Milletia pinnata	Fabaceae	39
38	गम्हार	Gamhar	Gmelina arboea	Lamiaceae	3
39	साल	Sal Tree	Shorea Robusta	Dipterocarpaceae	6
40	सागौन	Teak Tree	Tectona Grandis	Lamiaceae	4
41	गुलमोहर	Flame tree	Delonix regia	Fabaceae	6
42	धौरा	Dhaura	Anogeissus latifolia	Combretaceae	1
43	पीपल	Peepal	Ficus religiosa	Moraceae	1
44	बरगद	Banyan	Ficus Benghatensis	Moraceae	1
45	मनी प्लांट	honey plent	Epipremnum qurem	Araceae	6
46	कैक्टस	Senita Cactus	Opuntia	Cactaceae	1
47	दूब घास	Doobgrass	Cynodon dactylon	Poaceae	-
48	फर्न	Silver Fern	Matteuccia Struthiopteris	Onocleaceae	-
सजावटी पौधे/ऑक्सीजन देने वाले पौधे					
49	लालपत्ता	Poinsettia	Euphorbia pulcherrima	Euphorbiaceae	3
50	यूफोर्बिया	Crown of thorns	Euphorbia Milii	Euphorbiaceae	1
51	सतालू	Peach	Prunus persica	Rosaceae	1
52	मयूर पंख	thuja of Morpankhi	Platycladus Orientaalis	Cupressaceae	1
53	मनी प्लांट	honey plent	Epipremnum qurem	Araceae	6
54	तुलसी	holi Basil	Ocimum Sanctum	Lamiaceae	7
55	पीपल	Peepal	Ficus religiosa	Moraceae	1
56	क्रोटन प्लांट	Croton	Codiaeum variegatum	Spurges	1
57	डंब केन	Dumb Cane	Dieffenbachia seguine	Araceae	1
58	एरिका पाम	Butterfly palm	Dypsis lutescens	Arecaceae	2

महाविद्यालय परिसर में लगाये गये पौधों के नाम व महत्व

क्र.	पौधों के नाम	महत्व
01	आम	आम हमारे देश का राष्ट्रीय फल है। इसके फल में विटामिन A तथा C प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके कच्चे फलों का आचार बनाया जाता है। कच्चे आम में पौटैशियम, टार्टरिक, साइट्रिक व मैलिक ऐसिड पाया जाता है। जो हमारे शरीर के लिये बहुत ही लाभदायक है। इसे फलों का राजा कहा जाता है जो कैंसर से बचाव करता है, पाचन क्रिया ठीक रखता है, मोटापा कम करता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर बनाता है।

Mangifira indica

02 **अमरूद** अमरूद के सेवन से शरीर में कोलेस्ट्रॉल का नियंत्रण होता है। विटामिन B पाया जाता है। अमरूद प्यास को शांत करता है, हृदय को बल देता है, कृमियों का नाश करता है, उल्टी रोकता है, पेट साफ करता है और कफ को बाहर निकालता है। अमरूद पाचन में भी फायदेमंद होता है। इसके पत्तों में एण्टीबैक्टीरियल गुण होता है जो पेट दर्द ठीक करता है।

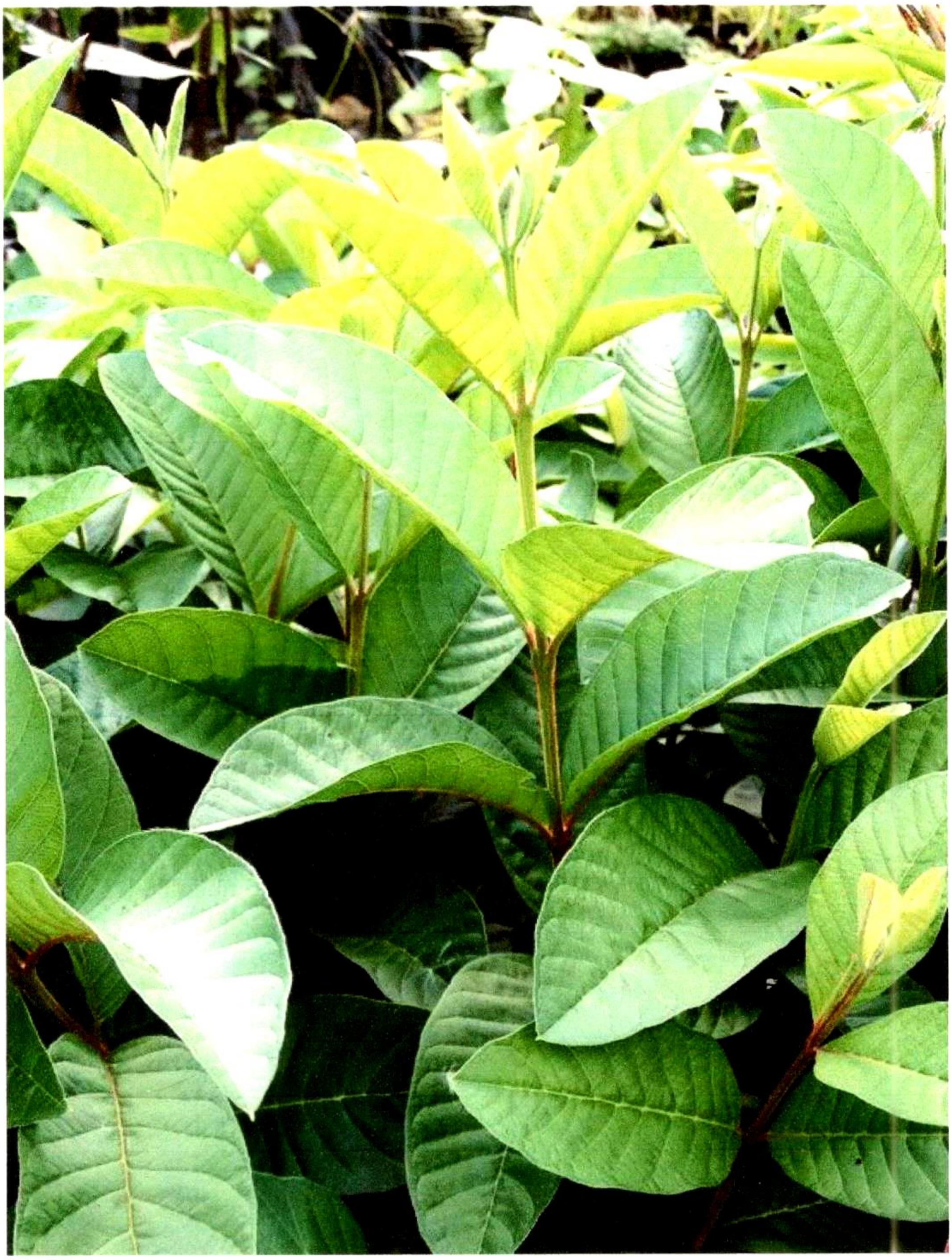

Psidium guvava

03 **पपीता**

पपीते में उच्च मात्रा में फाइबर होता है। जो कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करने में सहायक है। रोग प्रतिरोधक क्षमता, ऑखों की रोशनी बढ़ाने में इसका उपयोग किया जाता है। पाचन तंत्र को सक्रिय रखने में तथा पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द को कम करने में सहायक है।

Carica papaya

04 **जामुन**

मधुमेह रोगियों के लिये जामुन एक रामबॉण उपाय है। कैंसर रोग को बचाने में कारगर योगदान होता है। इसकी कोमल हरी डंठल का दातून करने से पायरिया रोग ठीक होता है। जामुन खाने से दस्त ठीक होता है और पाचन क्रिया में फायदेमंद है।

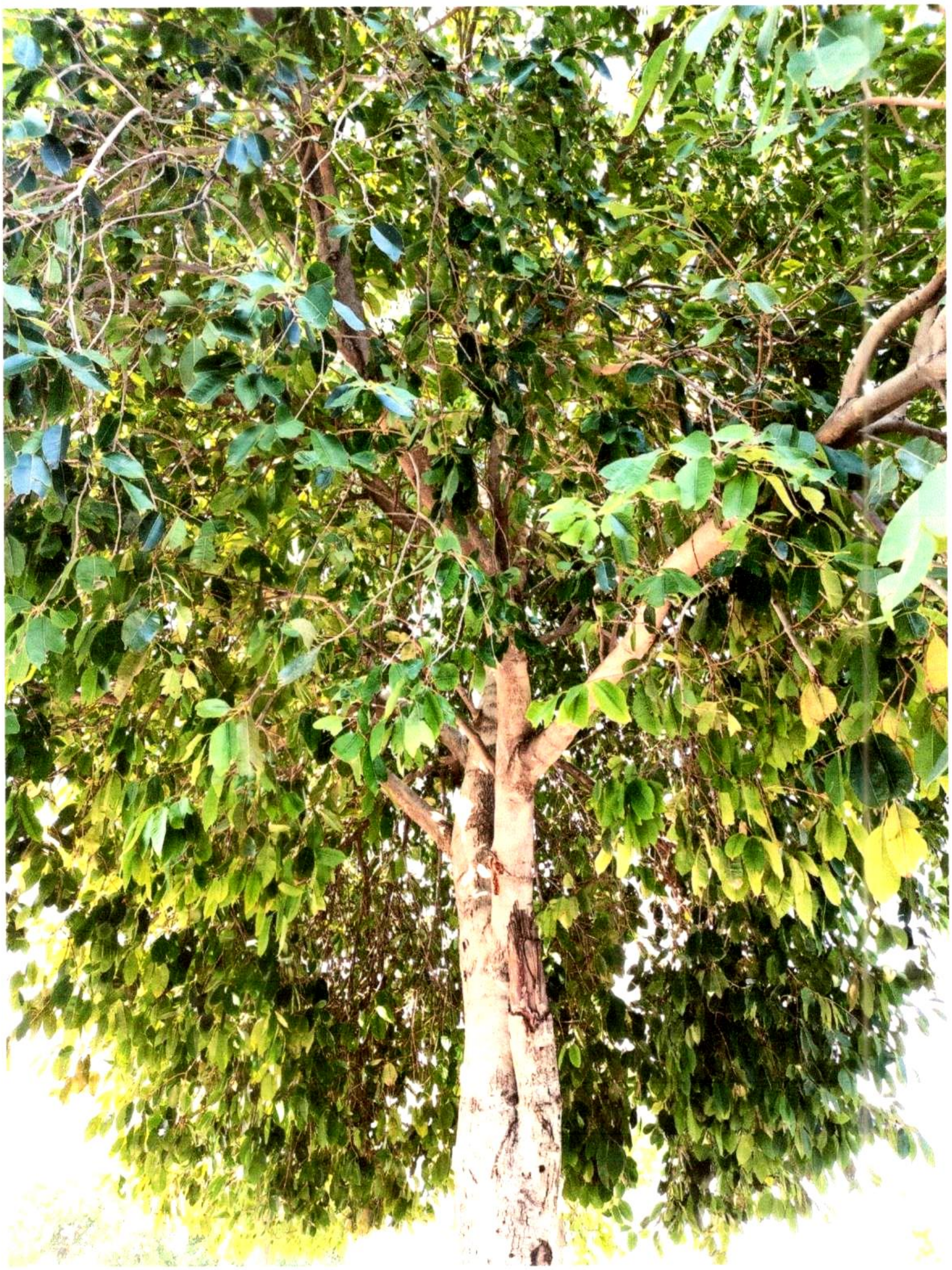

Syzygium cumini

05 **बेर**

रसीले बेर में कैंसर कोशिकाओं को पनपने से रोकने का गुण पाया जाता है। शरीर का वजन कम करने में सहायक है। बेर में पर्याप्त मात्रा में विटामिन A, C और पोटैशियम पाया जाता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंटस का खजाना होता है। इसे खाने से शरीर की चमक लंबे समय तक बरकरार रहती है।

Ziziphus mauritiana

06 **सीताफल** यह अन्य फलों की तरह स्वादिष्ट फल है। लोग इसे बड़ी पसंद से खाते हैं। इसका उपयोग कफ दोष ठीक करने के लिये, खून साफ इत्यादि में होता है

Annona squamosa

07 **काजू**

काजू में प्रोटीन अधिक मात्रा में होता है। इस लिए इसे खाने से बाल और त्वचा स्वस्थ्य और सुन्दर हो जाते हैं। काजू कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखता है। इसमें आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है इस लिए खून की कमी को दूर करने के लिये खाया जाता है। यह जल्दी पच जाता है।

Cashew

08 **बेल**

इसके गूदा का शर्बत एवं लस्सी बनाकर पीने से 'लू' नहीं लगता है। इससे गोंद भी प्राप्त होता है। इसकी पत्तियों को पूजा में उपयोग किया जाता है। कफ, विकार, बदहजमी, दस्त, मूत्र रोग, पेचिस, डायबिटीज, ल्यूकोरिया में बेल सहायक होता है। इसके अलावा पेट दर्द, हृदय रोग, पीलिया, बुखार, आंखों के रोग आदि में भी बेल के सेवन से लाभ मिलता है।

Aegle marmelos

09 **शहतूत** इसके उपयोग (सेवन) से पाचन शक्ति बढ़ती है। आँखों की रोशनी, शरीर में रक्त बढ़ाता है। 'लू' का खतरा कम करता है। शहतूत के पौधे पर कोकून पालन भी किया जाता है। इसके फल खाने से लीवर की बीमारियाँ ठीक हो जाती है। यह सर्दी जुकाम में बेहद फायदेमंद है। यूरिन से संबंधी समस्यायें कम हो जाती है।

Morus alva

10 **तेन्दू**

तेन्दू का फल दस्त रोकने में उपयोगी है। तेन्दू उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है। प्रभावशाली एंटीआक्सीडेंट का अच्छा स्त्रोत है। इसके फल में फाइबर पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह सूजन को कम करने में सहायक होता है। हृदय स्वास्थ्य के लिये भी फायदेमंद है। इसके फल को खाने से किड़नी स्वस्थ रहती है। यह घाव को ठीक करता है और दर्द कम कर देता है। दमा रोग में उपयोग होता है। तेन्दू का उपयोग बालों को सुन्दर बनाने एवं मुँह के छालों को ठीक करने में किया जाता है।

Diospyros melanoxylon

11 **सायकस** सायकस के तनों से मण्ड (Starch) निकाल कर साबूदाना (Sago) का निर्माण किया जाता है। इसके बीज को अण्डमान द्वीप के लोग खाने में उपयोग करते हैं। इसके पत्तियों को सजावट के लिये उपयोग करते है। इसकी पत्तियों से रस्सी एवं झाडू बनायी जाती है।

Cycas revoluta

12 **कटहल** कटहल का उपयोग सब्जी, अचार, पकौड़े एवं कोप्ता बनाने में किया जाता है। आयरन और जिंक प्रचुर मात्रा में होता है। अस्थमा और एनीमिया को कम करने में सहायता करता है।

Artocarpus heterophyllus

13 **गुलाब**

ज्योतिष एवं पूजा में गुलाब का उपयोग किया जाता है। गुलाब जल बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। गुलाब का उपयोग करने से दिल दिमाग और आमाश्य की शक्ति में वृद्धि होती है, इसके अलावा गुलाब की पंखुडियों में लेक्सटिव और डाइयुरेटिक गुण भी होते हैं, जो पेट को साफ करने बोडी से टॉक्सिन को बाहर निकालने, मेटाबॉलिस्टम को बेहतर करने और वजन कम करने में मदद करते है।

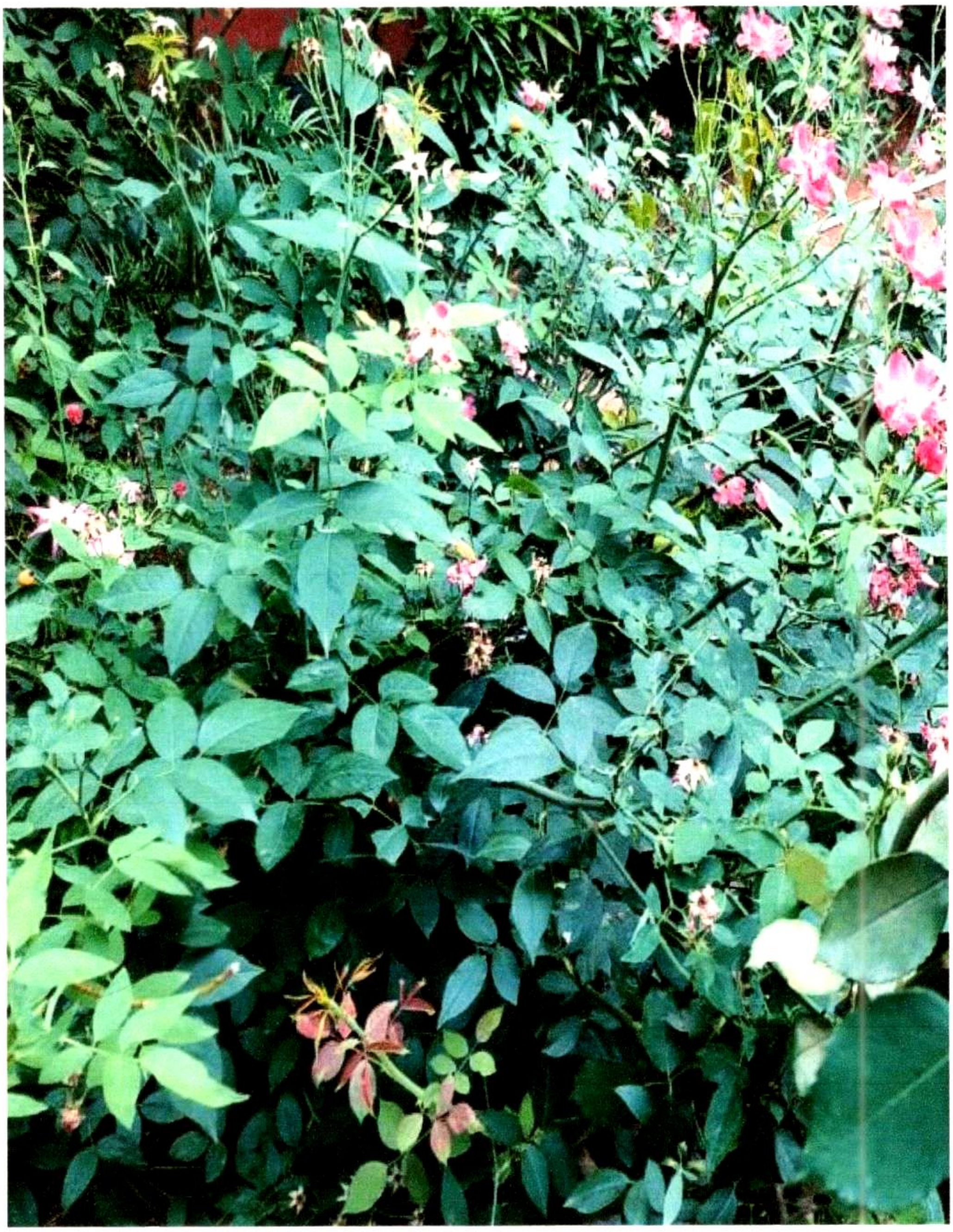

Rosa damagcena

14 **गेंदा**

गेंदा के फुलों से माला बनाया जाता है, पूजा में उपयोग होता है। इसके पत्तियों को घाव, फोडे– फुंसियों पर लगाने से आराम मिलता है। यह त्वचा में चकते जैसे एलर्जी को भी ठीक करता है। यह मांसिक धर्म के समय होने वाले दर्द से भी राहत देता है।

Tagetes erecta

15 **सदाबहार** सदाबहार की पत्तियाँ विघटन के दौरान मृदा में उपस्थित हानिकारक रोगाणुओं को नष्ट कर देती है। इसके फुलों का उपयोग मधुमेह व बावासीर को ठीक करने में किया जाता है। यह खाज,खुजली व घावों को ठीक करने में उपयोगी है। इसका उपयोग एण्टीटॉक्सिन (जहर को खत्म करने) में भी उपयोग किया जाता है। यह एलर्जी को भी ठीक करता है।

Catharanthus roseum

16 **मोगरा** इसके फूल को पीस कर आंखों के चारो ओर लगाने से आंखों की जलन कम होती है। सिर दर्द, कान दर्द में इसके फूल फायदेमंद होता है। यह शीतलता प्रदान और बेहद खुशबूदार होता है।

Jasminum auriculatum

17 **गुड़हल** अधिक मात्रा में विटामिन C होता है। सर्दी–खॉसी में सेवन करने से जल्द ही राहत मिलती है। इसके फूल का उपयोग पूजा करने में विशेषरूप से किया जाता है। इसमें कैल्सियम, वसा, फाइबर, आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट होता है जो दवाओं में उपयोग होता है। इससे कॉलेस्ट्रॉल, मधुमेह, हाई ब्लड प्रेशर और गले के संक्रमण जैसे रोगों का इलाज किया जाता है।

Hibiscus

18 **गुलदावदी (सेवंती)**

यह वीर्यवर्धक शरीर की चमक बढ़ाने वाली पित्र को शांत करने वाली तथा जलन को समाप्त करती है। इसके फूल भोजन को पचाने वाले, हृदय को स्वस्थ रखने वाले तथा रक्त प्रवाह ठीक करने वाले होते है। यह कोई रंगो के फूल देने वाले पौधे होते हैं।

Chrysanthemum

19 **गुलैची**

यह आध्यात्मिकता का प्रतीक है। यह धार्मिक ज्ञान, तप, संयम और वैराग्य का रंग है। शुभ संकल्प का सूचक है। गुलेची का फूल केसरिया रंग का होता है जो केसरिया रंग को बलिदान का प्रतीक माना जाता है। यह रंग राष्ट्र के प्रति हिम्मत और निःस्वार्थ भावनाओं का सूचक है।

Plumeria alva

20	मैक्सिकन सूरजमुखी	इसके फूल कामोद्दीपक, पौष्टिक होते हैं और सूजन को दूर करने के लिए उपयोग किये जाते हैं। इसके बीजों का दस ग्राम की मात्रा तक सेवन करने से जहर उतर जाता है। घेंघा रोग में इसके पत्ते और लहसुन को पीस कर त्वचा पर लगाया जाता है।

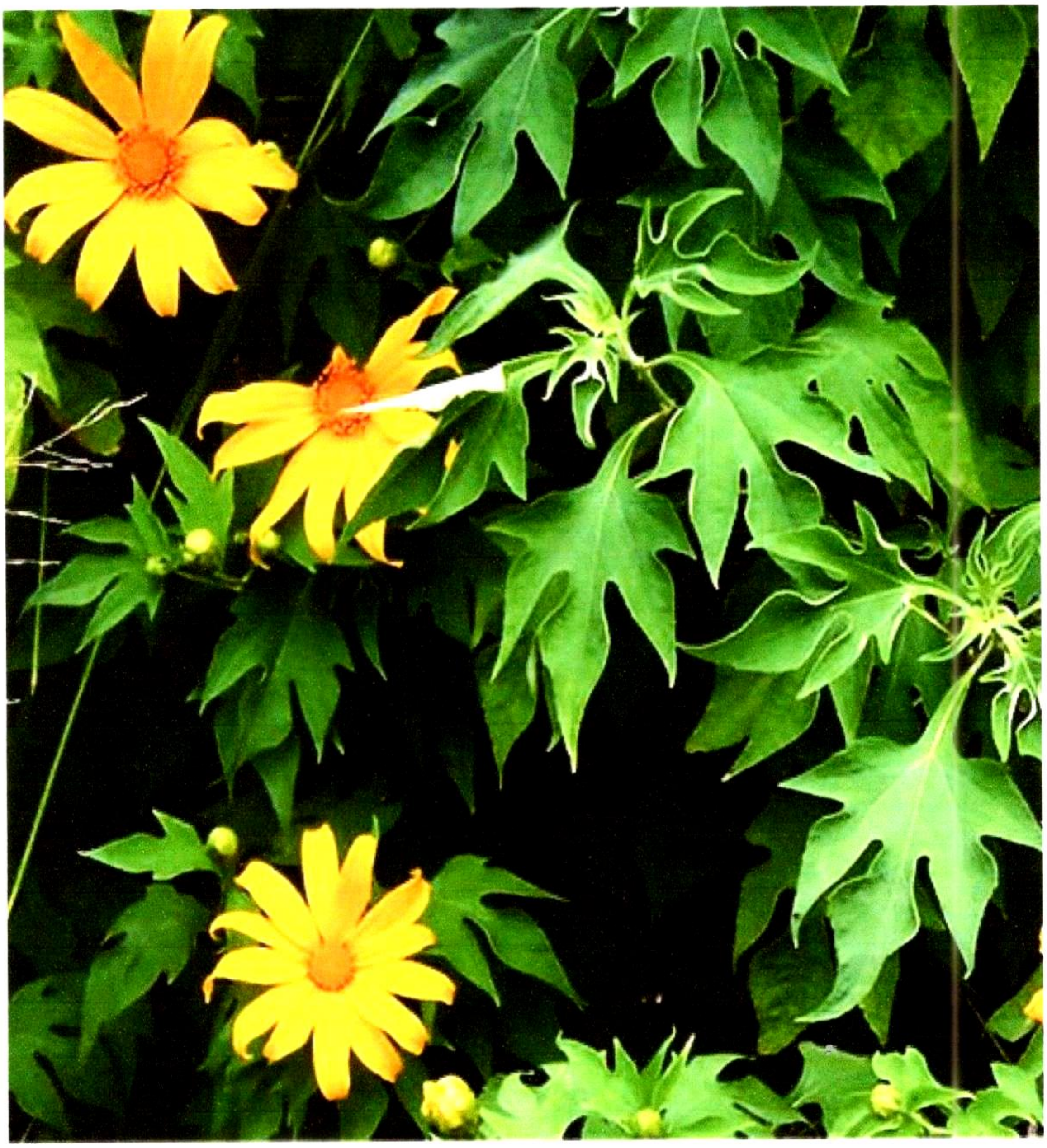

Tithonia diversifalia

21 **तुलसी**

तुलसी का पौधा अत्यधिक उपयोगी के साथ–साथ पवित्र और पुज्यनीय पौधा है। यह सभी हिन्दू घरों में लगाया जाता है। और पूजा की जाती है। इससे घर में सकारात्मक उर्जा आती है। इसका उपयोग सर्दी–जुकाम व अन्य दवाईयों के रूप में किया जाता है। यह वर्ष भर हरा–भरा रहता है। इसके सेवन से अनियमित पीरियड्स की समस्या दूर होती है। दाद, खास–खुजली में भी इसकी पत्तियाँ उपयोगी है। कैंसर के इलाज में, श्वास की दूर्गंध दूर करने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

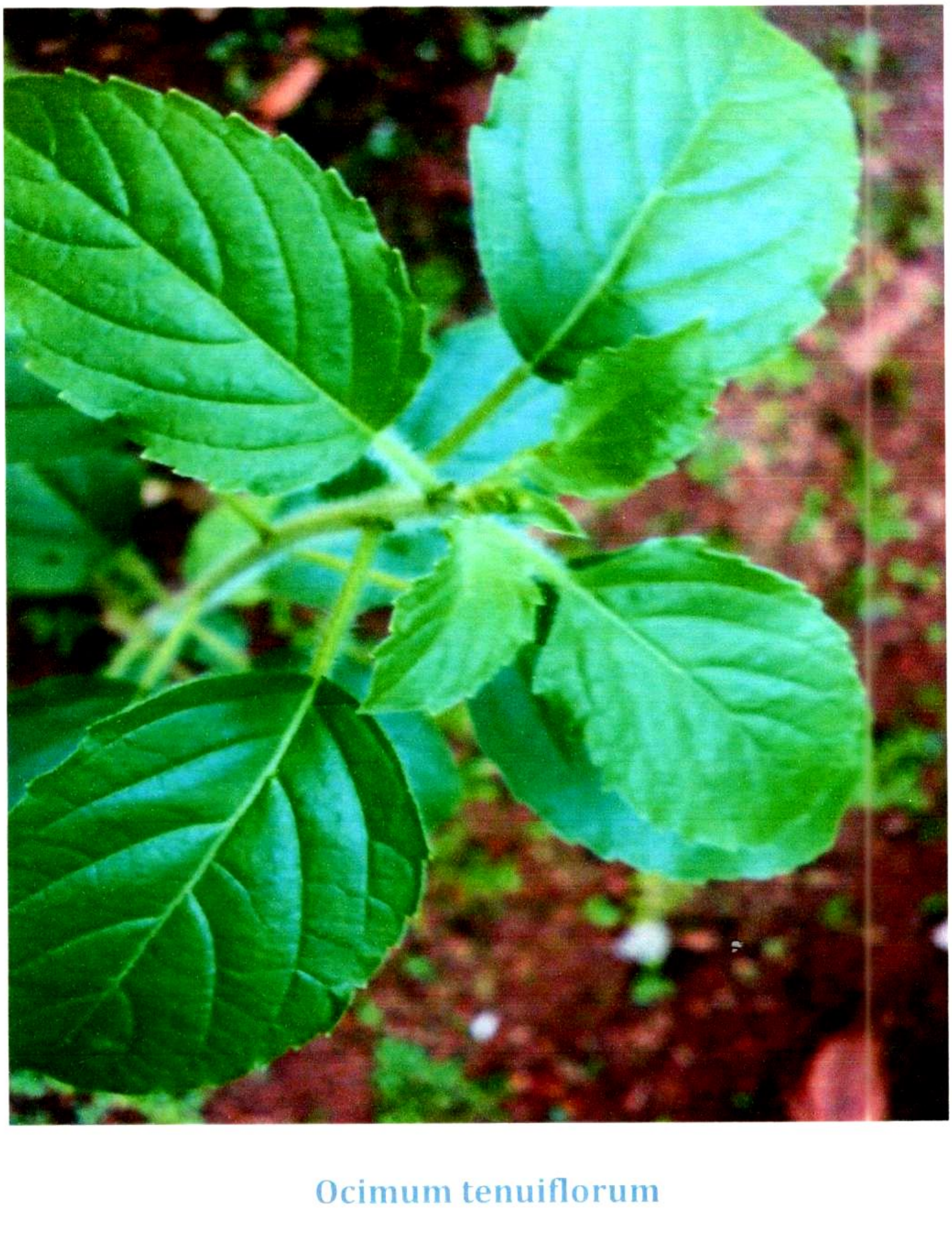

Ocimum tenuiflorum

22 **घीक्वार (ऐलोवेरा)**

इसका उपयोग शरीर के जोड़ों में दर्द के लिये किया जाता है। यह याददाश्त ठीक करता है। इसे खाने से सर्दी नहीं होता है। इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता पायी जाती है अतः इसके सेवन से इम्यूनिटी बढ़ती है। कब्ज और पेट दर्द ठीक हो जाता है इसके सेवन से तथा घाव, फोड़े, फुंसीयों को भी ठीक करता है। बालों के रोग और त्वचा रोग को भी ठीक करता है।

Aloevera

23 **पत्थरचट्टा**

इसका उपयोग किडनी से संबंधित लोगों में किया जाता है। किडनी की पथरी पेट फूलने की समस्या, रक्त को शुद्ध करने में इसका उपयोग किया जाता है। इसे सजावटी पौधे के रूप में लगाते हैं। घावों को ठीक करने में, शरीर पर किसी भी प्रकार के फोडों के इलाज में इसका उपयोग किया जाता है।

Bryophyllum pinnatum

24 **मदार**

दुध से संबंधी गर्भपात के कारक, कुष्ठ रोग, अस्थमा, त्वचा रोग एवं दस्त, पेचिस के इलाज में इसका उपयोग किया जाता है। मदार (आक) के पत्तों को गरम करके बॉधने पर चोट अच्छी हो जाती है। कोमल पत्तों के धूँआ से बावासीर शांत होती है। अण्डकोश के सूजन को कम करने में इसके पत्तियों का उपयोग किया जाता है। इसके फलों के पकने पर रूई प्राप्त होता है। जो तकिया बनाने के काम आता है।

Calotropis gigantea

25 **ऑवला** ऑवला में विटामिन C प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। खून साफ करने में ऑवला फायदेमंद होता है। बालों के रोगों को दूर करने में भी इसका उपयोग किया जाता है। कैंसर के बचाव, अल्सर की रोकथाम, हाई ब्लड प्रेसर में उपयोग किया जाता है। ऑवला में एंटीऑक्सीडेन्ट पाया जाता है।

Phyllanthus emblica

26 **पीली कंटेरी** खांसी के इलाज मे यह सबसे बेहतरीन जड़ी–बूटी है। गर्म प्रभाव व कसैले स्वाद के कारण कठेरी कफ और वॉत को ठीक करने का गुण रखती है। यह प्राकृतिक रूप से पाचन में सुधार लाकर पाचन तंत्र को मजबूत करती है। श्वांस से जुड़े विकारों को दूर करने के लिये व्यापक रूप से पीली कंटेरी का उपयोग किया जाता है।

Argemone mexicana

27 **स्नैक प्लांट** स्नैक प्लांट का उपयोगृ घर की सजावट के लिये किया जाता है जिसे संसेविया ट्रिफसिआ भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से एशिया और अफ्रीका का पोधा है। स्नैक प्लांट घर की वायु अर्थात इनडोर एयर को फिल्टर करता है। यह जहरीले प्रदूषकों को काटता है।

Dracaena trifasciata

28 चकोरा

वर्षा ऋतु की पहली फुहारा पड़ते ही इसके पौधे खुद उग आते हैं और गर्मी के दिनों में जो–जो जगह सूख कर खाली हो जाती है, वह घास और पवाड़ के पौधे से भरकर हरी–भरी हो जाती है। इसके पत्ते अठन्नी के आकार के और तीन जोड़े वाले होते हैं। यह दाद के गोले–गोले घेरे को नष्ट करता है। इस कारण इसे संस्कृत में चक्र मर्द यानी चक्र नष्ट करने वाला कहा गया है।

Salicornia europaea

29 **नीम**

नीम एक औषधीय पेड़ है। चर्म रोग में इसका विशेष महत्व है। यह फोड़ों– फुंसियों को ठीक करता है। दाद, खाज, खुजली को ठीक करता है। इसके बीज के तेज से बालों के रोग ठीक होते हैं। इसकी पत्तियों का उपयोग कीटनाशक के रूप में किया जाता है। कान दर्द में इसके तेल का उपयोग किया जाता है। इसका दातवन करने से दांतों के रोग ठीक होते हैं।

Azadirachta indica

30 **अशोक**

स्त्री संबंधी रोग में इसको अनुसूचक माना जाता है। अशोक का उपयोग त्वचा के रंग में सुधार करता है। यह रक्त को शुद्ध करता है और त्वचा की एलर्जी को दूर रखने में मदद करता है। यह विषाक्त पदार्थ को निकालने और रंग को साफ करने का काम करता है। यह त्वचा की जलन को शांत करने में भी उपयोग किया जाता है।

Saraca asoca

31 **पलाश** पलाश के फूल से फ्रेण्डली रंग बनाया जाता है। इसके जड़ के रस रतौंधी और नेत्र के सूजन को कम करने में उपयोग किया जाता है। पलाश जड़ की छाल दर्द निवारक, अर्श या बवासीर तथा व्रण या अल्सर में फायदेमंद होता है।

Butea Monosperma

32 **महुआ**

इसके सूखे फूल पोषक तत्वों के भरमार लिये होते हैं और इनके सेवन से पेट के तमाम विकार दूर हो जाते हैं। महुए की छाल में टैनिन नामक रसायन प्रचुरता से पाया जाता है। जो कि घाव को सुखाने के लिये महत्वपूर्ण होता है। इसके फूल खाने में उपयोग किया जाता है और मशहूर पेय महुआ वाइन (शराब) बनाया जाता है। महुआ बीज हैल्दी फैट का अच्छा स्त्रोत है। यह मौसमी फ्लू, बुखार, मिर्गी, कैंसर जैसे तमाम समस्याओं को ठीक करता है। कुष्ठ, अल्सर, गठिया को ठीक करता है।

Madhuca longifolia

33 **मुनगा**

मुनगा के पत्तियों में कैल्शियम और विटामिन–सी के साथ ही प्रोटीन, पोटैशियम, आयरन, मैगनीशियम और विटामिन–बी की भरपूर मात्रा मिलती है। इसके पत्तियों के रस पीने से हैजा, दस्त, पेचिस, पीलिया और कोलाइटिस जैसे रोगो के लिये काफी असरकारक होता है। साथ ही इसके फूल, पत्तियों और फलों को सब्जी के रूप में भी खाया जाता है।

Moringa aleifera

34 **करी पत्ता (मीठा नीम)**

मीठी नीम के पत्तों का उपयोग भौज्यपदार्थों को स्वादिष्ट बनाने के लिये किया जाता है। इसके सेवन करने से बालों का झड़ना कम होता है। पाचन स्वास्थ्य को बढ़ाता देता है। वजन घटाता है, दिल की बिमारियों से बचाता है। एनीमिया और मधुमेह को कम करता है।

Murraya Coenigii

35 करंज करंज के पौधे को औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। गंजेपन की समस्या, आँखों, दातों के रोग में करंज से लाभ मिलता है। आयुर्वेद के अनुसार धाव, कुष्ठ रोग, पेट की बीमारी और बवासीर जैसे रोग में इससे फायदा मिलता है।

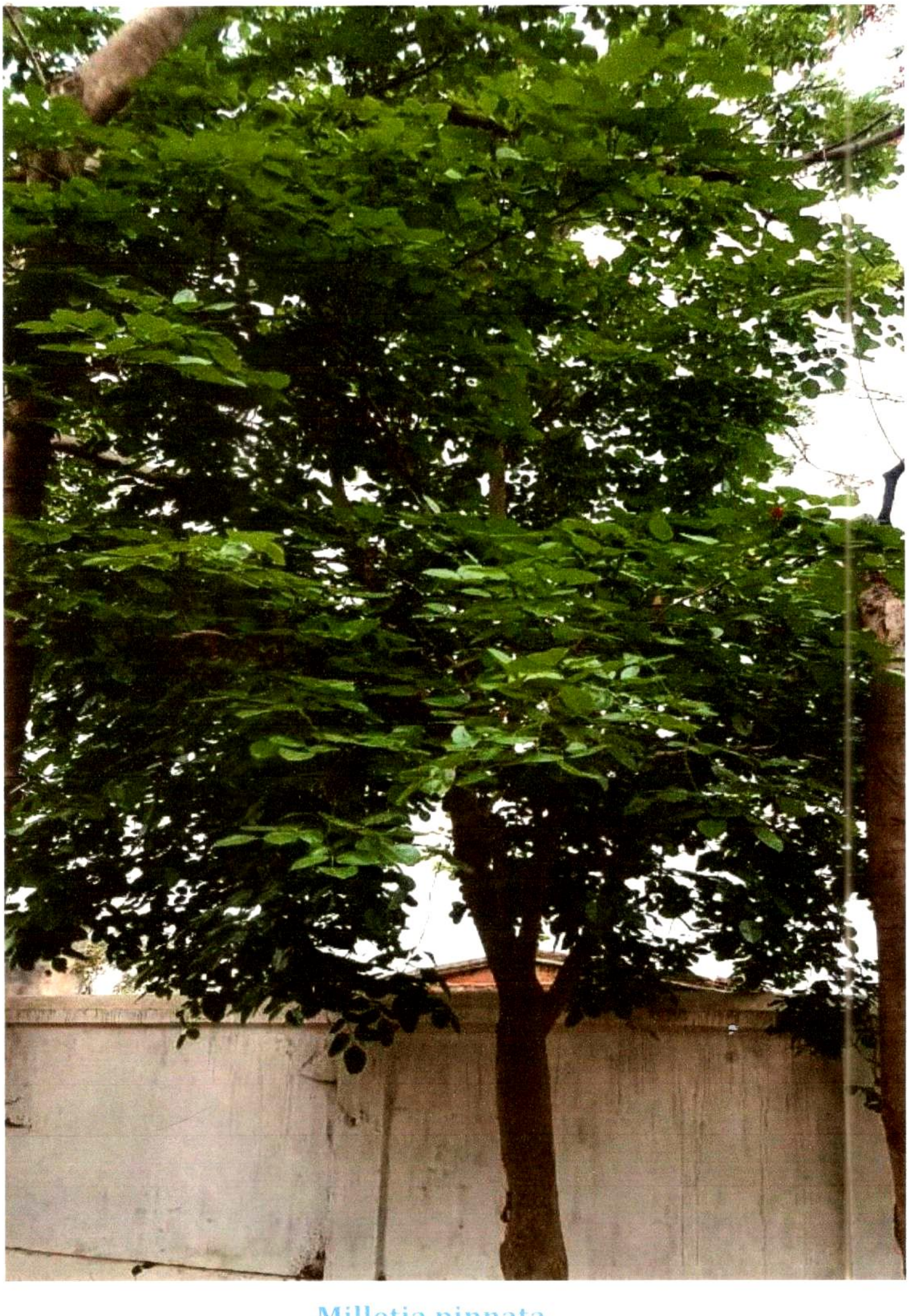

Milletia pinnata

36 **गम्हार** गम्हार का उपयोग बुखार, सिर दर्द में किया जाता है। इसकी पत्तियों को पीस कर सिर पर लेप करने से बुखार के दौरान होने वाले सिर दर्द को दूर करता हैं, साथ ही जलन और सिर का भारीपन से भी छुटकारा मिलता है। इसके तेल की 1 से 2 बूंद नाक में डालने से बालों का पकना रूक जाता है। गम्हार के काढ़ा को 10 से 30 मिली लीटर की मात्रा से प्रतिदिन नियमित रूप से सेवन करने से फेफड़े की समस्या को ठीक करता है।

Gmelina arboea

37 **साल**

इसके पत्तियों से दोना, पत्तल बनाया जाता है। कोमल डंठल दातुन एवं कठोर तनों से फर्नीचर, खिड़की–दरवाजे आदि बनाया जाता है। इसकी लकड़ीयों को मुख्यरूप से ईंधन के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसके फलों के तेल से साबुन बनाया जाता है। इसका फल जानवरों के पेचिस में उपयोग किया जाता है।

Shorea robusta

38 **सागौन** फर्नीचर, दरवाजा, टेबल, पलंग, कुर्सी, प्लाई आदि इसकी लकड़ी से बनाई जाती है। इसके फलों का क्वाथ बनाकर 15–30 बूंद पीने से मूत्ररोग में लाभ होता है।

Tectona grandis

39 **गुलमोहर**

गुलमोहर का पौधा हमारे महाविद्यालय में लगाया गया है। जिसका पौधा हरा–भरा और मनमोहक होता है। गुलमोहर पर पहला फूल निकलने के एक सप्ताह के भीतर ही पूरा वृक्ष गाढ़े लाल रंग के अंगारो की तरह फूलों से भर जाता है। इसका पूरा पेड़ फूलों से सुसज्जित होता है अर्थात् इसमें बहुत ज्यादा फूल लगते हैं। इससे भी ऑक्सीजन प्राप्त होती है जिससे लोगों को राहत मिलती है। इसका पेड़ बड़ा होता है। पीले गुलमोहर के 1–2g छाल चूर्ण तथा फूल के चूर्ण का सेवन करने से ल्यूकोरिया के उपचार में लाभ मिलता है।

Delonix regia

40 **धौरा** धौरा एक वृक्ष है इसका उपयोग कफ पित को दूर करने और पाचन शक्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण है। यह अतिसार (दस्त), पेचिस, प्रमेह, पीलिया, खूनी बावासीर, रक्त विकार, कमजोरी को नष्ट करने वाला होता है तथा इसके फूल मलरोधक हैं। इसका गोंद पौष्टिक, कामोद्दीपक है।

Anogeissus latifolia

41 **पीपल** पीपल की पत्तियों का उपयोग रंग निखारने में काम आती है, घाव, सूजन, दर्द से आराम देता है। यह खून को साफ करता है। इसकी छाल मूत्र–योनि विकार में लाभदायक होती है। इसकी छाल का उपयोग पेट साफ करने में भी किया जाता है। हिन्दु धर्म के लोग इसकी पूजा करते हैं।

Ficus Religiosa

42 **बरगद**

यहाँ एक दीर्घजीवी पेड़ है जो घनी–ठंढ़ी छाया देता है। इसे तोड़ने काटने से दूध जैसा रस निकलता है जिसे लेटेक्स अम्ल कहा जाता है। यह हमारे देश का राष्ट्रीय पेड़ है। यह 20 घण्टे से अधिक समय तक ऑक्सीजन देता है। इसके फल, बीज, दूध (रस) बहुत से रोगों के इलाज में उपयोगी होता है। पत्तियाँ घावों को ठीक करती है। इससे कफ, वात, पित्र रोग को ठीक किया जा सकता है। नाक, कान या बालों की समस्या में भी बरगद उपयोगी है।

Ficus benghalensis

43 **मनीप्लांट** मनीप्लांट को घर में लगाना बहुत ही शुभ माना जाता है। इससे घर की दरिद्रता एवं नकारात्मक उर्जाओं का नाश होता है। मनीप्लांट को धनवर्षा के योग बनाती है। यह वर्ष भर हरा–भरा होता है जो सजावट के लिये भी घर में लगाया जाता है। यह ऑक्सीजन भी देता है।

Epipremnum aureum

44 **कैक्टस** कैक्टस का महत्व लीवर को स्वस्थ रखने, संक्रमण क्षति से बचाने में सहायक है। इसको फाइबर का खजाना माना जाता है। रक्त शरीर के उचित स्तर को बनाये रखने के लिये उपयोग कर सकते हैं। इसके फल में मैग्नीशियम कैल्सियम व विटामिन । पोषक तत्व पाये जाते हैं। इसका फल बहुत ही स्वादिस्ट होता है।

Cactaceae

45 **दूब घास** दूब के काढ़े से कुल्ला करने पर मुँह के छाले मिट जाते हैं। इस पर नंगे पैर चलने से नेत्र की ज्योति बढ़ती है। दूब घास कुष्ठ (कोढ़), दातों का दर्द, पित्त की गर्मी के लिये लाभदायक है। इसके रस को नकसीर में नाक में डालने से लाभ होता है। दूब घास में हल्दी–तेल का छिड़काव करते है और इसका सेवन करने से थकान, अनिद्रा दूर होता है।

Cynodon dactylon

46 **फर्न**

फर्न प्रमुख आर्थिक माहौल के नहीं है लेकिन इसका उपयोग खाद्य, दवा, जैव के रूप में, सजावट पौधों के रूप में और प्रदूषित मिट्टी के उपचार के लिये किया जाता है। वायुमंडल से कुछ रासायनिक प्रदूषकों को हटाने की उनकी क्षमता के लिये अनुसंधान का विषय रहे हैं।

Polypodiophyta

47 **छुई–मुई**

यह लाजवंती के नाम से जाना जाता है। इसे सूजन एवं गठिया रोग के दर्द को ठीक करने में इसका उपयोग किया जाता है। खाँसी को ठीक करने में तथा रक्त में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में मदद करता है।

Mimosa pudica Linn

48 **पॉइन्सेटीया** पॉइन्सेटीया एक फूलदार पौधा है। दवा बनाने के लिए पूरे पौधे का प्रयोग किया जाता है जैसे – ज्वर, गर्भपात, दर्द, उल्टी, बैक्टीरिया को मारने के काम में उपयोग किया जाता है।

Euphorbia pulcherrima

49	**यूफोरबिया मिलि**	यूफोरबिया पौधे से औषधिय जैसे दमा, श्वसनीय शोध, छाति में रक्त संचय, गंभीर दस्त तथा अन्य स्थितियों के उपचार के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

Euphorbia milii

50 **सतालू** कैंसर से बचने के लिये, आँखों को स्वस्थ रखने के लिये सतालू फायदेमंद होता है। कब्ज की समस्या से राहत दिलाने में सहायक है।

Prunus persica

51 **मयूर पंख (थूजा)**

यह एक सजावटी पौधा के रूप में लगाया जाता है। इसका विशेष महत्व भगवान श्री कृष्ण के मुकुट पर लगाया जाता है। इस पंख में देवी–देवताओं का वास होता है।

Platycladus orientalis

Codiaeum variegatum

Dieffenbachia seguine

Kentia Palm

महाविद्यालय परिसर में हरियर छत्तीसगढ़ के तहत वृक्षारोपड़ का आयोजन

महाविद्यालय परिसर की हरियाली व संरक्षण

प्राचीन काल से ही पेंड़–पौधों का मानव के जीवन में विशेष महत्व रहा है। क्योंकि हमारे पूर्वजों, ऋषियों–मुनियों व संतो के लिये वन तपस्या का प्रमुख स्थान रहा है। इन वनों में महान ऋषियों के आश्रम और उद्यानों में वनस्पतिक शास्त्रियों के स्थान रहे हैं। जहाँ पर संत व उनके शिष्य रहा करते थे। साथ ही पेड़–पौधों को ईश्वर का रूप मान कर पूजा–अर्चना करने की परंपरा प्रचलित है। पेड़–पौधे मानव जीवन के लिये प्रकृति के अनुपम उपहार है। यह उद्यान, हर्बल गार्डन ही नहीं बल्कि औषधियों का भण्डार भी है। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिये इनका विशेष महत्व है। पीपल के वृक्ष में ऑक्सीजन प्रदान करने का अनुपात अन्य वृक्षों की तुलना में अधिक होता है। इसके अतिरिक्त नीम, बबूल, तुलसी, ऑवला व सभी आदि वृक्षों का औषधि के रूप में विशेष महत्व है।

सुझाव

1. वन संरक्षण हम सबकी एक जरूरत है। वनों का कटाव मानव सभ्यता के लिये एक गंभीर खतरा हो सकता है। अतः प्रकृति एवं अपने जीवन में हरियाली कायम रखने के लिए वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
2. पर्यावरण व महाविद्यालय परिसर में हरियाली के लिए वृक्षारोपड़ में कुछ चिन्हित पौधे जैसे-- पीपल आदि पौधे और लगाई जाए। तथा लगाये गये पौधों का संरक्षण करने की आवश्यकता है।
3. बाहरी मवेशियों के मुक्त आवागमन से पौधे नष्ट होते है। जिनसे बचाव की अतिआवश्यकता है।

उपसंहार

महाविद्यालय में पर्यावण संरक्षण का ध्यान रखा गया है। महाविद्यालय परिसर से वन क्षेत्र भी लगा हुआ है इसलिये यहाँ एक व्यवस्थित इको–सिस्टम कार्य कर रहा है। हरिहर छत्तीसगढ़ कार्यक्रम के तहत महाविद्यालयीन छात्र–छात्राएँ वृक्षारोपड़ में बढ़–चढ़ कर भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवक, छात्र वर्ष भर संरक्षण करते है। महाविद्यालय में प्रवेशित छात्रों को पर्यावरण विषय का अध्ययन अनिवार्य है जिसके अंतर्गत छात्र एक पौधे को गोद लेकर उनका संरक्षण करते है।

Suresh Prasad Prajapati
Guest lecturer (Botany)
Govt. Rani Durgawati
College Wadrafnagar.

प्राचार्य
शास. रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर, जि. बलरामपुर (छ.ग.)

Beni Prasad Dehariya
Guest lecturer (Geography)